ANVESHA-A Multidisciplinary E-Journal for all Researches Volume 1, Issue 2, December 2020
Bi annual, Bi lingual, Peer reviewed, Referred Journal
Available online on: www.anveshaejournal.com e-ISSN 2582-6719

"हिन्दी और संस्कृत का अन्तर्सम्बन्धः तथ्य और विचार"

नलिनी सिंह

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चुनार मीरजापुर, उ०प्र०

सारांश

किसी भी भाषा की उत्पत्ति अचानक नहीं होतीय बल्कि भाषा की उत्पत्ति के लिये पूर्व से ही स्थितियॉ निर्मित होती रहती है, उसके पीछे एक विशाल परम्परा होती है, जिसके फलस्वरुप भाषा की उत्पत्ति और विकास को आधार मिलता है। कई बार ऐसी स्थिति बन जाती है कि किसी भाषा की उत्पत्ति के सम्बन्ध में विद्वानों के विचार मेल नहीं खाते जिसके कारण कई अवधारणाएं विस्तार पाती हैं, भाषा की उत्पत्ति कैसे हुयी? उसका आधार क्या है? वह कितने भागों में बॅटी, यह अध्ययन और शोध का विषय बनता है। संस्कृत के सम्बन्ध में बात करें तो संस्कृत की भी ऐसी ही स्थिति रही है। कई भाषाओं की जननी देववाणी कही जाने वाली संस्कृत भाषा का प्रभाव कई भाषाओं पर पड़ा, संस्कृत भाषा के समानान्तर कई भाषाएं विकसित हुई हैं। उदारणार्थ संस्कृत और प्राकृत, पूर्व में एक ही भाषा मानी जाती थी, बाद में उसी भाषा से वैदिक संस्कृत, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश आदी भाषाओं के रुप विकसित हुये। इसी तरह हिन्दी भाषा के उदगम के सन्दर्भ में भी विद्वानों के भिन्न-भिन्न मत हैं, जिसमें कुछ विद्वान 'हिन्दी को संस्कृत की बेटी कहते है', वहीं अन्य विद्वानों के मत में 'हिन्दी का अपना स्वतंत्र अस्तित्व है'। वे हिन्दी का उद्‌गम संस्कृत से न मानकर अपभ्रंश से मानते हैं। हिन्दी भाषा और संस्कृत भाषा के अन्तर्सबन्ध को विश्लेषित करना इस शोध पत्र का प्रयोजन है, इस दृष्टि से यथा संभव तथ्य और विचार प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

बीज शब्दः उद्‌गम, अवधारणा, अन्तर्सम्बन्ध, विचार, सिद्धांत।

हिन्दी भाषा के उद्‌गम के सम्बन्ध में यह मत प्रचारित है कि वह आरम्भ से जन सामान्य के मध्य व्यवहृत थी तथा संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और अवहट की बात करें तो वह जनसामान्य में प्रचलित व व्यवहृत नहीं थी। विद्वानों के अनुसार ये भाषाये सहित्य की भाषाएं थीं, इन भाषाओं के साथ-साथ बोलचाल की भाषा का अस्तित्व भी निरन्तर बना रहा। बोलचाल के भाषा की निरन्तरता, प्रवहमानता के कारण आगे चल कर आधुनिक भिन्न-भिन्न भाषाओं में स्थापित होती गई। इस के अनुसार हिन्दी भाषा की उत्पत्ति संस्कृत, प्राकृत, अवभ्रंश का विकास, इस विकास प्रकृियॉ से नही हुयॉ। भाषा के उद्‌गम एवं विकास सम्बन्धी विभिन्न मतों, सन्दर्भित, विस्तृत विश्लेषण शोधपत्र के केन्द्र में है। वैसे हिन्दी भाषा की उत्पत्ति के सम्बन्ध में प्रामाणिक साक्ष्यों के उपलब्धता कम

होने के कारण शोध सम्बन्धी प्रक्रिया में कठिनाई आती है। ''हिन्दी भाषा की उत्पत्ति के सम्बन्ध में पाश्चात्य विद्वान 'ग्रियर्सन' का योगदान प्रशंसनीय रहा है, ग्रियर्सन के अतिरिक्त 'मैक्समूलर, काडवेल, बीम्स और हार्नली' ने भी इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। तथ्यों के आधार पर पारम्परिक धारणाएं टूटती नजर आती है, जिसमें कुछ सिद्धान्त तो पूर्ण रुप से असत्य प्रतीत होते है।''[१]

हिन्दी भाषा की उत्पत्ति कैसे हुयी, इस सम्बन्ध में विद्वानों के विचारों में जो मतैक्य है या द्विविधापूर्ण स्थिति उत्पन्न करने की स्थिति है उसके सन्दर्भ में महावीर प्रसाद द्विवेदी का कथन उद्धृत करना समीचीन है। वे कहते है- ''अबतक लोगों का खयाल था कि हिन्दी की जननी संस्कृत है, यह ठीक नहीं। हिन्दी की उत्पत्ति अपभ्रंश भाषाओं से है और अपभ्रंश भाषाओं की उत्पत्ति प्राकृत से है। प्राकृत अपने पहले के पुरानी की पुरानी बोलचाल की संस्कृत से निकली है और परिमार्जित संस्कृत भी (जिसे हम आज केवल संस्कृत कहते हैं) किसी पुरानी बोलचाल की संस्कृत से निकली है। आज तक जॉच से यही सिद्ध हुआ है कि वर्तमान हिन्दी की उत्पत्ति ठेठ संस्कृत से नही।''[२]

हिन्दी भाषा की उत्पत्ति कहॉ से है? किन पूर्ववर्ती भाषाओं से निकली है, हिन्दी की उत्पत्ति लिखने में आदिम आर्यो ने पुरानी से पुरानी भाषाओं का उल्लेख किया है तथा उनके क्रमिक विकास का वर्णन किया है, उदाहरणर्थ ''पुरानी संस्कृत, वैदिक संस्कृत, परिमार्जित संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश भाषाओं का संक्षिप्त वर्णन देना पड़ा है।''[३]

भारत में प्रमुख रुप से आर्य परिवार एवं द्रविड़ परिवार की भाषाएं बोली जाती हैं, जिसमें उत्तर भारत की भाषा, आर्य भाषा से सम्बन्धित है। उत्तर भारत की आर्य भाषा परिवार में संस्कृत सबसे प्राचीन भाषा है। वैदिक संस्कृत का प्राचीनतम रुप ऋग्वेद में मिलता है। ''संस्कृत उस विशाल वनस्पति के समान है, जिसका मूल अत्यन्त गहराई तक और शाखायें अत्यधिक दूर-दूर तक फैली हुई है''[४]।
संस्कृत सहज बोल चाल की भाषा थी, साहित्य सृजन होते-होते ये व्याकरणिक क्लिष्टता के कारण दुरुह होती गई। इसके अनन्तर प्रथम प्राकृत जो पालि भाषा के नाम से जानी जाती है, बौद्ध इसे 'मागधी भाषा' मानते है, जो बाद में 'पालि' कहलाई। प्रथम प्राकृत अथवा पालि में संस्कृत का क्लिष्ट व्याकरण जन साधारण के लिये समझना आसान नहीं था। पालि पश्चिमी प्रदेश अर्थात आधुनिक उत्तर प्रदेश की भाषा थी, यह पूरी तरह से परिनिष्ठित साहित्यिक भाषा थी। प्राकृत का अर्थ ही है 'सहज रुप से बोली जाने वाली भाषा' अर्थात बोल चाल की भाषा में साहित्य सृजन होने लगता है। सहज और साहित्य भाषा के समानान्तर एक पृथक भाषा भी विकासित होती रहती है, ऐसा ही रुप प्राकृत का था।

दूसरी प्राकृत को साहित्यिक प्राकृत भी कहा गया, जिसे बोल चाल के रुप में प्रयुक्त किया गया,

विद्वानों का मत है कि यह सहज बोल चाल की भाषा 'अपभ्रंश' कहलाई। बोचाल की भाषा होने के कारण यह प्रबुद्ध जन के मध्य प्रचलित नहीं हुयी। जैन साहित्य इसी प्राकृत में लिखा गया। प्राकृत भाषा पॉच रुपों में विभक्त हुयी, जिसको निम्नांकित शीर्षकों में समझ सकते है- शौसेनी, पैशाची, महाराष्ट्री, अर्द्धमागधी और अपभ्रंश।

'अपभ्रंश के सम्बन्ध में यह मत भी प्रचालित है कि यह साहित्यिक भाषा के समानान्तर प्रयुक्त हो रही थी, जनता के मध्य प्रचलित थी तथा व्यवहार में लायी जा रही थी और यही 'अपभ्रंश' कहलाई। चूँकि सामान्य जनता के मध्य यह प्रयोग में लाई जा रही थी जिसके कारण यह साहित्य सृजन की भाषा भी बनी। आचार्य हेम चन्द्र ने इसी भाषा का व्ययाकरण बनाया। ''प्रसिद्ध भाषा विज्ञानविद् भोलानाथ तिवारी ने प्राकृतों से विकसित अपभ्रंश को सात भागों में बॉटा, जिनसे भारतीय भाओां का, उपभाषाओं की उत्पत्ति व विकास हुआ। शैर सेनी से पश्चिमी हिन्दीय राजस्थानी और गुजराती निःसृत हुयी। वहीं 'पैशाची' से लॅहदा और पंजाबी, ब्राचड से सिन्धी, 'खस' से पहाड़ी, 'महाराष्ट्री' से मराठी, मागधी से बिहारी बंग्ला, उड़िया व असामिया, अर्द्धमागधी से पूर्वी हिन्दी।''[५]

इन रुपों व भेदो के अतिरिक्त अवहट भाषा का अस्तित्व स्वीकार किया गया जिसे 'प्राचीन हिन्दी' के नाम से अभिहित किया गया। अवहट की विशषता यह है कि यह न तो पूरी तरह से 'अपभ्रंश है और न पूरी तरह से हिन्दी। हिन्दी और अपभ्रंश के मिश्रित रुप में (प्राचीन हिन्दी) विद्यापति ने काव्य सृजन किया है। विद्वानों का मत है कि 'प्राचीन हिन्दी' ही विकासित हो कर 'हिन्दी' बानी। प्राचीन हिन्दी (अवहट) और अपभ्रंश में समान विशेषताएं दृष्टिगत है। ये भाषाएं आपस में मिली-जुली हैं, जिसे चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जी ने 'पुरानी हिन्दी' कहा है। भाषा की उत्पत्ति और विकास के सम्बन्ध में यह मान्यता सर्वस्वीकृत होते हुये भी शोध का विषय बनी हुई है। इसके अन्य आयामों पर विश्लेषण अपेक्षित है।

हिन्दी भाषा की उत्पत्ति के सम्बन्ध में यह मत प्रचलित है कि हिन्दी का विकास 'संस्कृत से हो कर प्राकृत अपभ्रंश से हुआ है,। प्राकृत और अपभ्रंश जन सामान्य के मध्य प्रचलित थी तत्पश्चात् साहित्य के सृजन के लिए प्रयुक्त होने लगी। इस सन्दर्भ में प्राकृत और अपभ्रंश के जनभाषा होने के तथ्य उपलब्ध नहीं होते, यदि प्रमाण उपलब्ध होते तो इस सिद्धान्त को मान्यता मिलती। विद्वानो का मत है कि जनसामान्य में प्रचलित बोलियों में जो सहजता और स्वाभाविकता होनी चाहिए वह नहीं अपितु उनमे कृत्रिमता दृष्टिगत होती है, इस सम्बन्ध में किशोरी लाल गोस्वामी लिखा है कि 'जनगृहीत रुप से प्रथम अवस्था की प्राकृत हुयी हितीय अवस्था की प्राकृते बहुत कुछ कृत्रिम रुप से हमारे सामने उपस्थित है'। कुछ, जनपदो में प्राकृत का तीसरा रुप प्रचलित था, उसकानाम, रुप, कुछ भी हमारे सामने नही है। प्राकृत के (दूसरी, तीसरी अवस्था के) जो भी रुप साहित्य में उपलब्ध है उनसे हिन्दी की पटरी

बैठती नहीं है।' संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश साहित्यिक भाषाए थी बोलचाल नहींय हिन्दी स्वभाव से इन भाषाओं से भिन्न है इसी लिये हिन्दी को बोल-चाल की भाषा, सहज भाषा कहॉ गया।

हिन्दी की उत्पत्ति व विकास और संस्कृत से सम्बन्ध

हिन्दी आज पूरे विश्व में अपने भाषागत सामार्थ्य को दर्शा कर सम्मान पा रही है। हिन्दी को समृद्ध करने में, सर्वाधिक, समर्थ गुण से सन्निहित करने में, संस्कृत का भी योगदान है। संस्कृत से समृद्ध होने के कारण हिन्दी के शब्द भंडार समृद्ध होते है, विकास और परिष्कार की सीमाओं के लिये मार्ग खुलता है। संस्कृत की सहायता से हिन्दी भाषा में तत्सम शब्द तो आयातित है हीय संस्कृत की सहायता से अनेक नूतन शब्द भी निर्मित किये जा सकते हैं। इसप्रकार संस्कृत का प्रभाव हिन्दी पर पड़ता है।

हिन्दी की उत्पत्ति के सम्बन्ध में प्रख्यात भाषाविद् रामविलास शर्मा तथा व्याकरण के विद्वान किशोरी दास बाजपेयी ने 'हिन्दी को संस्कृत की बेटी' मानना अस्वीकार किया है। इस सन्दर्भ में रामविलास शर्मा का मत है कि 'हिन्दी संस्कृत से उत्पन्न नही है।' इस सिद्धान्त को अस्वीकृत करते हुये किशोरीदास वाजपेयी भी कहते है- 'हिन्दी की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से नहीं हुयी है, जो कि वदो में, उपनिषदों तथा वाल्मीकि या कालिदास आदि के काव्यग्रन्थों में हमें उपलब्ध है। हिन्दी और संस्कृत दोनों का पृथक और स्वतंत्र पद्धति पर विकास हुआ है।' हिन्दी और संस्कृत के स्वतंत्र अस्तित्व के सन्दर्भ में वाजपेयी का मत महत्वपूर्ण और विचारणीय है।

इसी तरह प्राकृत के सन्दर्भ में दखा जाय तो प्राकृत की विशेषताएं हिन्दी में दृष्टिगत नहीं होती इसलिए विद्वानों का मत है कि- ''कुछ भी हो साहित्य में उपलब्ध प्राकृतो में से कोई ऐसी नहीं है जिसे (हिन्दी खड़ी बोली) का उद्गम माना जा सके। हॉ, अवधी आदि का सम्बन्ध उनसे जरुर है।''

डॉ० रामविलास शर्मा संस्कृत-प्राकृत में ध्वनि सम्बन्धी प्रमुख भेद मानते हुए संस्कृत-प्राकृत की समानता की बात करते हैं, प्राकृत को उन्होंने साहित्य की भाषा माना और कहा कि 'प्राकृत लोच-चाल की भाषा नहीं थी' 'प्राकृतों का रुप प्रामाणिक नहींय उसका अभ्युदय काल प्रमाणिक नहींय संस्कृत से भिन्न प्राकृतें जनसाधारण की स्वतंत्र भाषाएं थी या नहीं, इसकी कसौटी यह है कि उनकी अपनी व्याकरण व्यवस्था और अपना मूल शब्द भण्डार है या नहींय संस्कृत-प्राकृत का मुख्य भेद ध्वनि सम्बन्धी है, जबकि संस्कृत और आधुनिक भाषाओं का भेद ध्वनि के अलावा रुप गठन और मूल शब्द भण्डार से सम्बन्धित है।'' डॉ० रामविलास शर्मा द्वारा किये गूढ़ अनुसंधान सूक्ष्म, तथ्यात्मक विवरण से स्पष्ट है कि संस्कृत-प्राकृत में संरचनात्मक स्तर पर समानताएं है और जो मुख्य भेद दृष्टिगत है वे ध्वनि सम्बन्धी है। वहीं अगर हिन्दी खड़ी बोली को देखे तो यह

संरचना की दृष्टि से, शब्द भंडार की दृष्टि से, व्याकरणिक दृष्टि से, प्रकृति-संस्कृत 'प्राकृत से अत्यन्त भिन्न प्रतीत होती है। प्राकृत के सन्दर्भ में यह महत्वपूर्ण है कि संस्कृत के शब्दों में ध्वनि परिवर्तन किया जा सकता है जैसे संस्कृत का राजा शब्द ध्वनि परिवर्तन के पश्चात 'राआ' हो जाएगा। ऐसी ही विशिष्टता और परिवर्तन की झमता अपभ्रंश में भी है। संस्कृत और हिन्दी का नर-नारी शब्द अपभ्रंश में 'णर-णारी' के रुप में बदल जाता है।

इस तरह ध्वनि परिवर्तन की क्षमता प्राकृत और अपभ्रंश दोनो में निहित है। अपभ्रंश और प्राकृत में सम्बन्ध क्या है? इस पर दृष्टिपात करने पर यह बात स्पष्ट रुप से सामने आती है कि अपभ्रंश भाषा प्राकृत से प्रभावित है, दूसरे शब्दों में अपभ्रंश प्राकृतो का विकसित रुप है जिसे तृतीय प्राकृत भी कहा गया है। वस्तुतः ''भारतीय आर्य भाषा के अन्तिम चरण को अपभ्रंश युग कहा जाता है। वास्तव में जब प्राकृत साहित्य की भाषा बन कर जनसामान्य या लोकभाषा से अलग होकर जड़ हो गयी तो भाषा के स्वाभाविक विकासवान रुप से कालान्तर में अपभ्रंश का जन्म हुआ और अपभ्रंश से ही बाद में हिन्दी, बंग्ला, पंजाबी, मराठी, गुजराती आदि विभिन्न आधुनिक आर्य भाषाएं प्रकट होने लगी।''[६]

लिखित साक्ष्यों और मतों से भी यही स्पष्ट होता है कि 'आर्यो' की भाषा पुरानी संस्कृत थी, उसका विकास अनन्तर प्राकृत के रुप में हुआ प्राकृतों के बाद अपभ्रंश की उत्पत्ति हुयी साथ ही संस्कृत से अन्य भाषाओं की। वर्तमान हिन्दी अर्धमागधी और शौरसेनी से निकली है इसि लिये लोगों को यह लगता है कि हिन्दी की उत्पति प्रत्यक्षतः संस्कृत से हुयी पर ऐसा नही है। इस सम्बन्ध में डॉ० ग्रियर्सन के शोध को तार्किक व सयुक्तिक माना जा सकता है। इतना अवश्य है कि हिन्दी की उत्पति के बाद संस्कृत के शब्द (तत्सम) हिन्दी में प्रयुक्त होने लगे। जो हिन्दी उत्पति के बहुत बाद की बात है। तत्सम शब्दों के प्रयोग से हिन्दी शब्द भण्डार समृद्ध हुये हैय इसमें कोई संशय नहीं है।

डॉ० नामवर सिंह ने 'प्रकृतिः संस्कृतम्' शीर्षक में स्पष्ट कहा है कि-'' बात बड़ी सीधी है, फिर भी विद्वानों ने इस पर बड़ा विवाद किया। प्राचीन काल के प्राकृत और अपभ्रंश के आचार्यो ने भी बड़े ही सहज ढंग से संस्कृत को प्राकृत मानकर प्राकृत व्याकरण आरम्भ किया है लेकिन आधुनिक युग के प्राकृत प्रेमी विद्वानों ने सामान्य कथन के सामने भी प्रश्न चिह्न लगा दिया। 'अपभ्रंश काव्यत्रयी की संस्कृत भूमिका' में इस बात पर विस्तार से विचार किया है।''[७]

''वस्तुतः 'प्रकृति संस्कृतम्' वाले कथन में आधुनिक भाषा वैज्ञानिक दृष्टि वाले विद्वानों के लिए खटकने वाली वस्तु यह है कि वहॉ प्राकृत को संस्कृत से उत्पन्न कहा गया है।''[८]

जो विद्वान प्राकृत को लोक भाषा तथा संस्कृत को परिष्कृत अथवा कृत्रिम रुप मानते है, उनके लिये

प्राकृत ही योनि है न कि संस्कृत।'' वस्तुतः प्राकृत के सन्दर्भ में पूर्वाग्रह ग्रस्त धारणा काम करती है जिसके मूल में विद्वानों का एक मत न होना है। 'प्राकृत का अर्थ है जनसाधारण की प्राकृत भाषा' तथा 'संस्कृत का अर्थ है उस जन बोली का संस्कार किया हुआ रुप।''९

प्राप्त तथ्यों और विचारों के अनुसार ''बोली का संस्कार करके उसे समर्थ और व्यवस्थित रुप देना बुरी बात नहीं है। यह तो मानव मनीषा का महत्वपूर्ण कार्य है लेकिन आजकल सहजता, स्वच्छन्दता आदि की ऐसी हवा चली है कि भाषा के क्षेत्र में क्षेत्र व्याकरण की व्यवस्था को अधिक अच्छा नहीं समझा जाता संस्कृत विरुद्ध प्राकृत की काल्पनिक सहजता के गौरव बोध का भी यही कारण है।''१०

उपरोक्त कथनों, मतों और तथ्यों के आलोक में हिन्दी और संस्कृत का अन्तर्सम्बन्ध को समझने का प्रयास किया है।

निष्कर्ष

अधिसंख्य विद्वानों के अनुसार हिन्दी भाषा का विकास अपभ्रंश के शौरसेनी, भागधी और अर्धमागधी रुपों से हुआ। अपभ्रंश का काल ११०० ई० तक रहा। अपमभ्रंश के विभिन्न क्षेत्रीय स्वरुपों से आधुनिक भारतीय भाषायें एवं उपभाषायें विकसित हुयी है, जैसे पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी पूर्वी हिन्दी और पहाड़ी पॉच उपभाषाओं तथा इससे विकसित कई क्षेत्रीय बोलियों खड़ी बोली ब्रज, जयपुरी, अवधी, गढ़वाली आदि को समग्र रुप से हिन्दी कहा जाता है। हिन्दी भाषा निरन्तर परिनिष्ठित, परिमार्जित होकर मानक भाषा के रुप में स्थापित हुयी जो बहुप्रचलित हो कर वैश्विक धरतल पर अपना परचम लहरा रही है।

सन्दर्भ

1. भ्जजचेण्ध्ध्रूपामण ैवनतबमण व्तलण ॅपामण भ्पदकप
2. जउण्ॅपामेंनतेमण (हिन्दी भाषा की उत्पत्ति)
3. उण् ूपाम`वनतेमण (हिन्दी भाषा की उत्पत्ति)
4. भाषा विज्ञान- डॉ० कर्ण सिंह, पृष्ठ-१११
5. हिन्दी भाषाः उत्पत्ति और विकास (उदयवीर सिंह) िजजचेरूध्ध्ीपदकप जववसेण्बवउण
6. हिन्दी भाषा और साहित्य- डॉ० कैलाशा नाथ पाण्डेय पृष्ठ-२०१
7. अपभ्रंश काल त्रयी की भूमिका- डॉ० नावर सिंह पृष्ठ-८१-८४
8. प्रकृतिः संस्कृतम् तत् भवतत् आगतम् (सिद्धहेमचन्द्र-८-२-व्याख्या)
9. हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग-पृष्ठ २६
10. हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग डॉ० नामवर सिंह, लोक भारतीय प्रकाशनप्रथम संस्कृत १९५२ पंचम संशोधित संस्कृत-१९७१